कहानी... आग की कलम से

पेड़ की पत्तों के बीच से जब
नीले आसमान की टुकड़े में समेटती
न जाने मेरी हाथ किसकी तलाश में थी
शायद उन बिखरे अरमानों की होगी
जो मेरी हाथ से गिरके बनी थी टुकड़े
शायद उन टूटे ख्वाबों की साँस की होगी
जो मुझसे खो गया था किसी मोड़ पे
अरे ! क्यों मैं यूँ बनु अब परेशान
क्योंकि मैं ही तो अग्नि हूँ
मुझमे ही मैं जलती हूँ

ज़िंदा कहूँ या मुर्दा कहूँ
दिल ज़िंदा ही है दफन, ख्वाबों की आग पे
क्या वो आग मैं खुद तो नहीं ?
दिल जल रही है हर पल
आँखों को दिल से इतना प्यार !
बेवजह ही बह रहे हैं
होगा दिल को करार दिलाने को

लेकिन न कभी बुझापाएगा उस आग
वो अधूरा नहीं छोड़ेगा मेरी कहानी
ख्वाबों के आग से लिखी गई है वो
दिल को जलाती, दिल में ही जलती
अधूरा कैसे छोड़ पाएगा उसे जब
ख्वाबों की जगह ही अपना लिए है वो
साँसो की लमहों भी चीन लिए है वो
रातें ढल रहे है, नींद भी वो छिपा में
चैन बनी पतंग, उड़ गया परिंदों के साथ
मुझे वो बना दिया बेकरार, बेबस ...

मेरी उस आधा कहानी भी भीग चुकी
मुश्किलों की बरसात में
अब शुरुआत से सफर, कभी न मुड़ेगा पीछे
इतना कुछ वो मुझसे की है
पूरा कर ही लेंगे मैं उस पहेली
आसमान झुक जाएगा, मिट्टी से मिलन हो पाएगा
जन्नत खिल जाएगा मेरी कलम पे
क्योंकि ....

Item Code: 958 Participant Code: 11

ये वही से लिखी कहानी है

वही से .... वही जलती आग से !!

(Note: Graded articles may be published in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).